शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०- पत्र

'निबंधमाला' गद्य भाग

शीर्षक - 'गाँधीजी और मैं'

लेखक - पंडित रामनन्दन मिश्र

प्रश्न:- 'गाँधीजी और मैं' शीर्षक संस्मरणात्मक निबंध का लेखक क्यों विद्रोही बन गया, प्रकाश डालें।

उत्तर:- 'गाँधीजी और मैं' शीर्षक निबंध के लेखक पंडित रामनन्दन मिश्र कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर जब घर आये तो इनके मन में पर्दा प्रथा के विरोध की बात उठी। उन्होंने कुछ नौजवानों को इकट्ठा किया और इस प्रथा का किस प्रकार विरोध किया जाए इस पर विचार- विमर्श हुआ। विचार सबों को अच्छा लगा परन्तु इसकी शुरुआत कौन करे, एक बहुत बड़ी समस्या थी। श्री मिश्र ने स्वयं इसका बीड़ा उठाया और परिवार के साथ उनका संघर्ष प्रारम्भ हो गया। उनके पूज्य पिता सहित परिवार का कोई भी व्यक्ति इस बात के लिए तैयार नहीं था कि रामनन्दन जी की पत्नी घर से बाहर निकले। बहुत दिनों तक घर वालों का डराने- धमकाने का काम होता रहा परन्तु लेखक ने एक न मानी। गाँधीजी को भी इसमें बीच- बचाव करना पड़ा। उन्होंने रामनन्दन जी की पत्नी को पढ़ाने के लिए राधाबाई तथा दुर्गाबाई को इनकी पत्नी के घर पर भेजा। इसी समय राधाबाई के पिता श्री मदनलाल जी का पटना में निधन हो गया और पटना वासियों ने पर्दा प्रथा के विरोध का आन्दोलन तेज कर दिया। गाँधीजी ने रामनन्दन जी से कहा आप अपनी पत्नी राजकिशोरी जी को साबरमती आश्रम भेज दें। राजकिशोरी जी अनुग्रह बाबू के साथ साबरमती आश्रम भेज दी गईं।

लेखक का अपने परिवार के साथ घोर संग्राम छिड़ गया। बहुत प्रयास करने पर भी पिता और पुत्र में बात नहीं बनी। गाँधी जी ने पंडित मिश्र को पत्र के माध्यम से यह सन्देश दिया कि विद्रोही-पुत्र को पिता के धन की आशा नहीं रखनी चाहिए।

शेष आगे-

2

रामनन्दन जी परिवार से विद्रोह करके अपना घर छोड़ दिया। वे पत्नी के साथ अलग झोपड़ी बनाकर रहने लगे। पंडित मिश्र राष्ट्र सेवा के लिए गाँधी जी के कहने पर परिवार से विद्रोह करके स्वतंत्रता आन्दोलन को गति प्रदान करने में अहम भूमिका निभायी है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

14/10/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०हि०-पत्र

जयद्रथ-वध - पद भाग

कवि- मैथिलीशरण गुप्त

श्रीकृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे,
सब शोक अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे।
"संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े",
करते हुए यह घोषणा वे हो गये उठकर खड़े।

भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण अपने सत्य वचन से सभी पाण्डवों को समझाते है जिसका प्रभाव भी सभी पर पड़ा किन्तु अर्जुन ने श्रीकृष्ण का संकेत समझ लिया। उसी से सन्दर्भित इस पद में कवि कहता है कि श्रीकृष्ण के यथार्थ वचनों को सुनकर अर्जुन का क्रोध और अधिक बढ़ जाता है और वह क्रोधाग्नि में जलने लगते हैं। वह अपना समस्त दुःख भूलकर अपने दोनों हाथों को मलने लग जाते हैं अर्जुन आक्रोश में भरकर घोषणा करते हुए उठ खड़े होते हैं और कहते हैं कि यह संसार अब देख ले कि हमारे शत्रु रणभूमि में मरे पड़े हुए हैं।

कवि इस पद्यांश के माध्यम से समस्त भारत वासियों को यह सन्देश देना चाहते हैं कि राष्ट्रीय आन्दोलन में हमारे देश के लाखों देश-प्रेमी ~~ब्रिटिश~~ अंग्रजी हुकुमत से लड़ते-लड़ते अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी। इससे देश भक्तों का हौसला पस्त नहीं हुआ बल्कि और हौसला बुलन्द हुआ परिणामस्वरुप हमारे शत्रु परास्त हुए और हम समस्त देशवासी अपनी मातृभूमि को आजाद कराने में पूर्णतः सफल हुए।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
14/10/20

शीर्षक - 'बातचीत'
लेखक - बालकृष्ण भट्ट

प्रश्न :- 'बातचीत' शीर्षक निबंध का सारांश लिखें।

उत्तर :- 'बातचीत' शीर्षक ललित निबंध महान निबंधकार और आलोचक बालकृष्ण भट्ट की रचना है। यह निबंध उनके निबंधकार व्यक्तित्व और निबंध कला के साथ-साथ भाषा-शैली का भी प्रतिनिधित्व करता है।

ईश्वर द्वारा प्रदत्त, शक्तियों में वाक्शक्ति मनुष्य के लिए वरदान है। बातचीत में वक्ता को नाज-नखरा का मौका नहीं मिलता परन्तु वक्तृता में चुटीली बात वक्ता को लाना पड़ता है जिससे करतल ध्वनि अवश्य हो। बातचीत, जहाँ दो आदमी का प्रेमपूर्वक संलाप है, वहीं स्पीच का उद्देश्य श्रोता में जोश पैदा करना होता है।

जिन्दगी को मजेदार बनाने के लिए ~~बात~~ बातचीत सारगर्भित तत्व है। बातचीत से चित्त हल्का और स्वच्छ होता है। उसे लेखक ने राम-रमौवल की संज्ञा दी है। रॉबिंसन क्रूसो 16 वर्ष कुत्ता, बिल्ली आदि जानवरों के बीच रहने के उपरांत फ्राइडे के मुख से मनुष्य की बोली सुनकर आनन्द विभोर हो गया। मनुष्य का गुण-दोष प्रकट करने के लिए बातचीत आवश्यक है। बेन-जानसन के अनुसार " बोलने से ही मनुष्य के रूप का साक्षात्कार होता है, जो सर्वथा उचित है।" एडीसन के अनुसार "असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है, जिसका तात्पर्य यह हुआ कि जब दो आदमी होते हैं तभी एक-दूसरे के सामने अपना दिल खोलते हैं। तीसरे की उपस्थिति मात्र से ही बातचीत की धारा बदल जाती है।" बातचीत में जब चार व्यक्ति लग जाते हैं तो बातचीत का कोई औचित्य नहीं रह जाता है।

बातचीत के लिए दो पक्षों की उपस्थिति लाजिमी है। बातचीत होने के लिए एक-दूसरे के पास आने-जाने में शिष्टाचार की त्रुटि हो सकती है। लेखक के अनुसार

शेष आगे -

Date: ____/____ Page: ____

अपने आप बात करने की शक्ति पैदा करना सबसे उत्तम प्रकार की बातचीत है।

वाक्शक्ति को दमन करने से अनेकों प्रकार का दमन हो जाता है। ऐसा नहीं होने पर जिह्वारूपी ~~कतरनी~~ कतरनी क्रोधाग्नि को भड़काकर अजेय को भी अपने आगोश में समेट लेती है। निष्कर्षतः मौन की साधना का साधक बनकर अपने आप से बातचीत करना सभी साधनों का मूल है, शक्ति परम पूज्य मन्दिर है, परमार्थ का एकमात्र सोपान है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 14।10।20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ